

सन्देश :

दो शब्द श्री चक्र के बारे में :-

श्री चक्र पर काफी साहित्य उपलब्ध है। भास्कर राय जैसे महा पण्डित एवं द्रष्टा ने जो कुछ लिखा है उससे अधिक कुछ लिख भी नहीं सकता। किन्तु कुछ प्रश्न ऐसे हैं जो अनुत्तरित हैं-

1. श्री चक्र को चक्र क्यों कहा गया, शेष यन्त्रों की भाँति इसे यन्त्र भी कहा जा सकता था। चक्र केवल उस वस्तु को कहते हैं जिसमें गति हो।

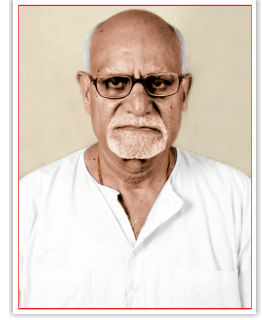
2. शेष यन्त्रों के कोण प्रायः समबाहु होते हैं, यदि विषमबाहु भी होते हैं तो सब का आकार प्रायः समान होता है जब कि श्री चक्र विभिन्न आकार के त्रिकोणों का विशिष्ट संयोजन है।

3. इसके हर वलय के अलग रंग हैं - क्यों?

4. इसे ऊर्जा का अक्षुण्ण स्रोत कहा गया है - क्यों?

पूज्यनीय गुरुजी ने श्री विद्या की दीक्षा देने के उपरान्त श्री चक्र की शक्तियों को अधिक से अधिक लोगों को परिचित कराने के लिये आदेश दिया था, तब से मैं उपलब्ध पूर्ण विधि-विधान से जागृत कर इसे इच्छुक व्यक्तियों एवं भक्तों को समर्पित कर रहा हूँ। इसे धारण करने वाले लगभग हर व्यक्ति ने इसकी शक्तियों का अनुभव किया है एवं 'माँ' की असीम कृपा उन पर है। अतः इसकी अद्वितीय परा शक्तियों के बारे में कोई संशय व्यक्त नहीं किया जा सकता किन्तु उपरोक्त प्रश्नों ने ये भी सोचने के लिये बाध्य कर दिया है कि श्री चक्र का पूर्ण रहस्य जानने के लिये एक भिन्न दृष्टिकोण की आवश्यकता भी है।

श्री चक्र में नौ चक्र हैं एवं इन्हे मानव शरीर स्थित चक्रों के समानान्तर कहा गया है। प्रायः शरीर में 7 चक्रों का उल्लेख है किन्तु सिद्ध सिद्धान्त में नौ चक्रों का उल्लेख है।



अन्य ग्रन्थ	सिद्ध सिद्धान्त	श्री चक्र
मूलाधार चक्र	आधार चक्र	त्रैलोक्य मोहन चक्र
स्वधिष्ठा चक्र	स्वधिष्ठान चक्र	सर्वआशापरिपूरक चक्र
मणिपूरक चक्र	नाभि चक्र	सर्व संक्षोभण चक्र
अनाहत चक्र	हृदय चक्र	सर्व सौभाग्य दायक चक्र
विशुद्ध चक्र	कण्ठ चक्र	सर्वार्थ साधक चक्र
प्रज्ञा चक्र	तालु चक्र	सर्व रक्षाकर चक्र
सहस्रार चक्र	ब्रह्म रंध्र चक्र	सर्व रोगहर चक्र
	आकाश चक्र	सर्व सिद्धिप्रद चक्र
		सर्वानन्दमय चक्र

कुछ ग्रन्थों में त्रैलोक्य मोहन चक्र को सहस्रार एवं त्रिवलय को वैन्दव स्थान अर्थात् सहस्रार का चन्द्र स्थान कहा गया है शेष चक्रों की तुलना नहीं की गयी। कुछ ग्रन्थों ने बिन्दु को सहस्रार कहा है। यदि इन दोनों कथनों को ठीक समझा जाये तो आकृति कुछ इस प्रकार हो जाती है।



ये आकृति भगवान शिव के डमरू की है इसकी नाद एवं लय के प्रभाव से हर अध्ययनशील व्यक्ति परिचित है। इस डमरू की नाद ने कई बार सृष्टि में संहार, परिवर्तन एवं सृजन किया है।

क्या ये सभी क्षमताएं श्री चक्र के भी निहित हैं? क्या इसी कारण मनीषियों ने श्री चक्र को ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एवं संहार का कारण माना है? श्री चक्र के पूजन में पालन एवं संहार क्रम दोनों ही होते हैं। क्या पंचदशी की नाद एवं शिव डमरू की नाद में भी सामन्जस्य है? सम्भावना है अर्थात् जितनी सृजन एवं संहार की क्षमता शिव वाद्य में है उतनी ही श्री चक्र में, पंचदशी में एवं शरीर में स्थित चक्रों में है। श्री चक्र की संरचना चतुष्कोण, त्रिकोण, वलय एवं कमल दलों के वलयों के संयोजन से बनी संरचना है। शरीर में निहित चक्र भी कमल दलों, त्रिकोण आदि की रचना बतायी गयी है। ये चक्र तीव्र गति से घूमते रहते हैं। थियस फिजिकल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में एवं चीनी ग्रन्थों में लेखकों का कहना है कि ये केवल प्रकाश रेखाओं की संरचना है, तीव्र गति से घूमने के कारण ये त्रिकोण एवं कमल दल की आकृति बना लेते हैं। क्रियात्मक प्रयोग करने से इन पुस्तकों का कथन सत्यापित नहीं हो पाता इसका उल्टा अवश्य होता है। यदि इस षड चक्रों की आकृति को तीव्र गति से घुमाया जाये तो रेखाओं का समूह दिखता है। षड चक्र बहुत तीव्र गति से घूमते रहते हैं ग्रन्थों के अनुसार इनकी अनुलोम गति ऊर्जा को वातावरण से सोख कर शरीर को देती है एवं जब ये विलोम गति से घूमते हैं तो शरीर की ऊर्जा को बाहर फेंकते हैं। क्या ये क्रिया श्री चक्र में भी होती है? क्या इसका पूजन, पूजन की विधि एवं पंचदशी अथवा षोडशी का जाप भी ऐसी ऊर्जा उत्पन्न करता है?

श्री चक्र के सभी 9 चक्रों के विभिन्न नाम हैं। इन नामों के अनुरूप ही उनके गुण एवं क्षमता भी है - किन्तु कैसे?

सम्पूर्ण श्री चक्र का मन्त्र पंचदशी अथवा षोडशी है किन्तु अलग अलग चक्रों के अलग अलग मन्त्र भी हैं। इनका उल्लेख प्रायः नहीं मिलता। मेरी अल्प बुद्धि एवं अध्ययन से जो समझ सका हूँ - लिख रहा हूँ। मैंने इनका प्रयोग किया है और अनुकूल प्रतिष्ठा भी प्राप्त हुई है।

1. **प्रथम चक्र भूपुर - त्रैलोक्यमोहन चक्र**, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुरा, चक्र की मुद्रा है सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा एवं मन्त्र है - अं आं सौः
2. **द्वितीय आवरण - सर्वआशापरिपूरक चक्र**, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुरेशी, चक्र की मुद्रा है सर्वविद्रविणी मुद्रा एवं मन्त्र है - ऐं क्लीं सौः
3. **तृतीय आवरण - सर्वसंक्षोभण चक्र**, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुर सुन्दरी, चक्र की मुद्रा है सर्वाकर्षिणी मुद्रा एवं मन्त्र है - ह्रीं क्लीं सौः
4. **चतुर्थ आवरण - सर्वसौभाग्यदायक चक्र**, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुरवासिनी, चक्र की मुद्रा है

सर्ववशङ्करी मुद्रा एवं मन्त्र है - हैं हक्लीं हसौ:

5. पंचम आवरण - सर्वार्थसाधक चक्र, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुराश्री, चक्र की मुद्रा है उन्मादिनी मुद्रा एवं मन्त्र है - हसैं हस्क्लीं हससौ:
6. षष्ठ आवरण - सर्वरक्षाकर चक्र, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुरमालिनी, चक्र की मुद्रा है महाकुश मुद्रा एवं मन्त्र है - ह्रीं क्लीं क्लें
7. सप्तम आवरण - सर्वरोगहर चक्र, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुरासिद्धि, चक्र की मुद्रा है खेचरी मुद्रा एवं मन्त्र है - ह्रीं श्रीं सौ:
8. अष्टम आवरण - सर्वसिद्धिप्रद चक्र, इस चक्र की शक्ति है त्रिपुराम्बा, चक्र की मुद्रा है बीज मुद्रा एवं मन्त्र है - हस्त्रैं हस्क्लीं हस्त्रौ:
9. नवम आवरण - सर्वानन्दमय चक्र, इस चक्र की शक्ति है श्री ललिता - महात्रिपुरसुन्दरी, चक्र की मुद्रा है योनि मुद्रा एवं मन्त्र है पंचदशी अथवा षोडशी

सम्पूर्ण यन्त्र का पूजन पंचदशी अथवा षोडशी से किया जाता है किन्तु यदि रोगों से पीछा छुड़ाना है तो पंचदशी को सर्वरोग हर चक्र के मन्त्र को अनुलोम-विलोम से सम्पुटित करके करें जैसे ह्रीं श्रीं सौ: क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं सौ: श्रीं ह्रीं। सम्मोहन के लिये अं आं सौ: क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं सौ: आं अं आदि आदि। साथ ही चक्र की विशिष्ट मुद्रा भी अवश्य बनाएं। जाप यदि दी हुई मुद्रा प्रदर्शित करते हुए करें तो सुगमता से सफलता प्राप्त होती है।

प्राक्कथन

प्रस्तुत दुर्गा सप्तशती के विधिपूर्वक पाठ से बढ़कर माँ के आशीर्वाद को प्राप्त करने का और कोई दूसरा मार्ग नहीं हो सकता है। श्री दुर्गा सप्तशती के सम्पूर्ण पाठ को करने में अधिक समय लगता है किन्तु यदि यही पाठ बीज मंत्रों की सहायता से किया जाये तो सम्पूर्ण पाठ दो घण्टे में किया जा सकता है। “दुर्गा सप्तशती बीज मंत्र” ये पुस्तक मुझे बहुत वर्षों पहले पूज्य गुरुदेव स्वामी प्रकाशानन्द जी, हरिद्वार ने प्रदान की थी। फिर ऐसी ही कई पुस्तकें और भी प्राप्त हुईं। सभी पुस्तकों के बीज मंत्रों में अत्याधिक असमानता थी, इन बीज मंत्रों की असमानताओं को दूर करने के लिये माँ जगदम्बा ने श्री प्रभात को प्रेरित किया, तत्पश्चात् उन्होने अपने सहयोगी श्री सन्दीप त्रिपाठी की मदद से इस कार्य को अत्याधिक खोजबीन करके माता की कृपा से पूर्ण किया। माँ जगदम्बा के आशीर्वाद से ही उन्हे मूल प्रतिलिपि मिली और उन्होने माँ के आशीर्वाद से इस पुस्तक को त्रुटिहीन रूप में माँ के भक्तों को उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया।

श्री प्रभात जी व उनके सहयोगी श्री सन्दीप त्रिपाठी के अथक प्रयासों के कारण ही ये पुस्तक आपके हाथ में है। ये अमूल्य निधि है चाहकर भी आप इसका मूल्य नहीं दे सकते क्योंकि माँ की कृपा का कोई मूल्य नहीं होता। ये पुस्तक माँ की प्रेरणा से ही छपी है, उनकी प्रेरणा से ही आप तक पहुँचेगी एवं उसका पाठ भी उनकी प्रेरणा से ही करेंगे तब स्वयं ही उनका आशीर्वाद आपको प्राप्त होगा।

अविनाश चन्द्र धीर

08953662950, 09415511949

माहात्म्य

श्री गणेश जी को, श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु साईनाथ महाराज जी को एवं परमपूज्य श्री गुरुजी को साष्टांग प्रणाम। आदि शक्ति जगदम्बा के श्री चरणों में साष्टांग प्रणाम। समस्त दृश्य व अदृश्य जगत को प्रणाम जो श्रीमाता का ही स्वरूप एवं उन्ही की लीला है। श्रीमाता का अनुग्रह समस्त लोकों में सर्वोत्कृष्ट, अनुपम एवं अनमोल है जो सरलतम होने के साथ ही जगद्जननी की प्रकृति के समान आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यन्त गूढ़, रहस्यमय एवं आनन्ददायक भी है। आदिशक्ति श्रीमाता ही महाशक्ति परब्रह्म परमात्मा है। जो विभिन्न रूपों में पृथक-पृथक लीला रचती हैं। हे महाशक्ति आप ही की शक्ति से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, पालन तथा संहार होता है। उत्पत्ति, पालन व संहार के पृथकत्व-अपृथकत्व का जो एकत्व है वह आदि शक्ति आप स्वयं ही हैं। आप ही परमात्मा रूप में विविध शक्तियों की पृथक - पृथक लीला कर रही हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल के 125 वें सूक्त में आदि शक्ति जगदम्बा ने स्वयं कहा है कि मैं ब्रह्माण्ड की अधीश्वरी हूँ। मैं ही सारे कर्मों का फल भुगताने वाली और ऐश्वर्य देने वाली हूँ। मैं एक होते हुए भी अपनी शक्ति से नाना रूप रचती हूँ। मैं जगत की जननी हूँ। मैं ही अपनी इच्छा से समस्त विश्व की रचना स्वयं ही करती हूँ। स्पष्ट है कि कोई भी कार्य बिना शक्ति के नहीं किया जाता, इसलिये वे ही ईश्वर हैं। तीनों लोकों में समस्त जीवों के लिये मातृभाव की विशेष महिमा है। सभी जगह सर्वप्रथम स्थान माता का ही है। उसी की दया व अनुग्रह के ऊपर बालक का ऐहिक, पारलौकिक और आर्थिक कल्याण होता है। समस्त ब्रह्माण्ड की सृष्टि, स्थिति और विलय जिनके संकेत मात्र पर हो रहा है, उनसे नाता जुड़ गया तो हमको दुःख कहाँ? माँ में समर्पण कर दिया तो फिर शेष क्या रहा? माँ ही श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शक, आदि गुरु व ज्ञान गुरु हैं।

जब हमारी दृष्टि सदैव उन महिमामयी के पावन नेत्रों पर स्थिर रहती हैं। माँ की करुणा की तरंगों में हम केवल स्वयं को ही आप्लावित

नहीं करते अपितु जो भी उस परिधि में आते हैं। वे सब “माँ” के अनुग्रह का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं। हमारे दृढ़ विश्वास, निःसंशयता और गहरी आस्था से महान विपत्तियाँ भी टल जाती हैं। पराजय और विफलता, विजय और सफलता में बदल जाती है। वैभव और ऐश्वर्यशाली जीवन को जीने की कला आ जाती है। भौतिक जीवन की सुख-सुविधाओं के उपभोग को “श्रीमाता” की देन मानकर भोगना है, और उसके न होने पर हमें उसके लिये संघर्षरत रहना है। हमें दोनों में ही समरस होना है। निष्ठा और श्रद्धा, आस्था और विश्वास हमारे एक मात्र सम्बल हैं। पाखण्ड, विश्वासघात व छल-कपट की छाया से ही दूर भागना है। सभी कर्मों को शान्त और निश्चल मन से सम्पादन करते हुये हमारी दृष्टि “माँ राज-राजेश्वरी” के चरणों में होनी है। जगत के सभी पदार्थ उन्हीं आद्याशक्ति की सम्पत्ति है और उस “माँ” की सम्पत्ति पर जिनका अधिकार है वे उसका निश्चित सीमा तक दूसरों का शोषण व पीड़न किये बिना उपयोग कर सकते हैं।

मार्कण्डेय पुराण के ही अन्तर्गत दुर्गासप्तशती में समस्त को माँ रूप में आदिशक्ति का ही स्वरूप बताया गया है तथा समस्त विद्याओं को विभिन्न रूपों में उनका स्वरूप बतलाया गया है।

दुर्गा सप्तशती सम्पूर्णतः उनकी शक्ति और स्वरूप पर विस्तृत प्रकाश डालती है। स्वर्ग व अपवर्ग का प्रदाता उन्हें बताया गया है।

बहुत से लोग बीजमंत्रात्मक सप्तशती के बारे में पूछते हैं, महिमा जानना चाहते हैं। इसमें श्लोक के स्थान पर मन्त्र इतना छोटा क्यों? इत्यादि। इस प्रश्न का उत्तर जानना अति आवश्यक है। निश्चित ही बीज अत्यन्त छोटा सौन्दर्य विहीन होता है। परमाणु भी अत्यधिक छोटा होता है, हम उसे देख नहीं सकते, किन्तु हम उसका परिणाम अवश्य देख सकते हैं। बीज जब जीवन्त होता है तो अंकुर और फूल में रूपान्तरित हो जाता है और तब उसमें अति सौन्दर्य होता है अर्थात् इकाई जितनी छोटी होगी उतनी ही घनी शक्ति से भरी होगी। ये भ्रम है कि छोटे से बीजमन्त्र से बड़े

परिणाम कैसे सम्भव है? यह धारणा अवैज्ञानिक ही है। विज्ञान जानता है कि परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म है तथा सूक्ष्म परमाणु के संयोजन से कितनी बड़ी ऊर्जा-विस्फोट का स्रोत उत्पन्न किया जा सकता है।

श्रीदुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोक का अमृत उसकी शक्ति उसके बीज में ही है। प्रत्येक श्लोक को शक्ति मंत्र के रूप में परिवर्तित करते हैं तो एक बीज उत्पन्न होता है। बीज मन्त्र को जागृत करने पर इसकी वास्तविक शक्ति का अनुभव स्वयं ही किया जा सकता है। बीज मन्त्र के सम्बन्ध में परमपूज्य गुप्तावतार बाबा जी द्वारा एक ग्रन्थ में कहा गया था कि जब शून्य रूपी गर्भ में किसी प्रकम्पन के साथ अर्थ रूपी चित्त सम्मिलित होता है तो बीज उत्पन्न होता है। बीजाक्षर के संयोजन से बीज मन्त्र आता है। बीज मन्त्र की साधना से एक ओर साधक को आशीर्वाद तथा वरदान की प्राप्ति होती है और दूसरी ओर वह स्वयं के साथ ही साथ संसार को भी चमत्कृत कर देता है। बीज मन्त्रों की साधना से कुण्डलिनी उत्थान के साथ विविध दैवीय शक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। जीवन में शुद्ध सात्विक भावों की अभिव्यक्ति होती है। बीज मन्त्रात्मक सप्तशती द्वारा साधक सगुण उपासना शक्ति को जागृत कर, निर्गुण उपासना पराशक्ति को उद्घाटित कर सकता है और हमारा उद्देश्य भी यही है कि सभी को सुगमता से महाशक्ति की कृपा प्राप्त हो। बीज मन्त्रात्मक सप्तशती साधक के लिये तो पराशक्ति का पुञ्ज स्वरूप है। तन्त्र शास्त्रों में इसका सर्वाधिक महत्व प्रतिपादित होने के कारण तान्त्रिक प्रक्रियाओं में इसके पाठ का बहुधा उपयोग होता है।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमाता की प्रेरणा के अनुरूप ही संयोजित करने का प्रयास भर है। इस प्रयास में बहुत से ग्रन्थों की भी सहायता ली गयी है। हमारी समिति सभी प्रकाशन सहयोगियों को सदैव धन्यवाद कहती है। हमारा प्रयास मात्र इतना है कि प्रत्येक घर में ऊर्जा का अक्षय भण्डार हो, गृह में वेद मन्त्रोच्चार, पाठ-यज्ञ, हवन आदि अपने इष्ट के अनुरूप पूजन स्वयं के प्रेम, लगन व परिश्रम से सदैव होता रहे। सभी

भक्त स्वयं को उस महाशक्ति के साथ जोड़े रखने की चेष्टा रखें। समस्त सांसारिक कार्य को करते हुये भी श्रीमाता के चरणों में अनन्य प्रेम रखें। श्रीमाता के किसी भी रूप के ध्यान व लीला के पाठ-पूजन में “गुरु” के अतिरिक्त अन्य किसी को मध्यस्थ न बनायें। स्वयं ही सीधा प्रेम संवाद स्थापित करें। योग्य गुरु के अभाव में ग्रन्थ ही सर्वश्रेष्ठ गुरु है। हमारा उद्देश्य ये कदापि नहीं है कि किसी भी दूसरे मत का खण्डन या अपने मत के प्रतिपादन का प्रयास भी किया जाये। हमें किसी पक्ष-विपक्ष में व्यर्थ के वाद-विवाद या तर्क की कुचेष्टा नहीं करनी है। अर्थात् जहाँ जो भी है अल्प ही है। जीव का ज्ञान कभी पूर्ण नहीं हो सकता है यह पूर्णता प्राप्ति की इच्छा ही चेतना के उस पार जाने की विधि हो सकती है। आज के भौतिकवादी युग में हम पूजन कर्म से दूर होते जा रहे हैं। हमारे अन्दर प्रेम व समर्पण का सर्वथा अभाव है। उस महाशक्ति से पाना तो सब कुछ चाहते हैं लेकिन अपने आप को उसकी कृपा का पात्र बनाना नहीं चाहते हैं। कुछ के हृदय में भय रहता है कि पूजन में कुछ त्रुटि न हो जाये और हमारा कुछ अनिष्ट न हो जाये। कुछ लोग दूर से हाथ जोड़कर काम चला लेते हैं और कुछ लोग आधारहीन कारणों की ओट लेकर धार्मिक कार्य से बचना चाहते हैं और कुछ लोग अपरोक्ष रूप से धन से धर्म को खरीदने का छल भरा असफल प्रयास करते हैं। परमशक्ति प्रेममय ही हैं। वह तो हमारे प्रेम व भक्ति को सहर्ष स्वीकारती हैं। भूलवश हुई त्रुटि भी उसी भक्ति का अंग है जिसको हम अपना सब कुछ समर्पित करते हैं, तो श्रीमाता नाराज क्यों होगी? श्रीमाता को तो अपने भक्तों/बालकों की भूल बहुत सुहाती है। उसे उसके लिये किया गया प्रयास/भक्ति बहुत अच्छी लगती है और वह “माँ” प्रेम से पथ प्रदर्शित कर सब सही कराती है। जो उस परम सत्ता का छल से भक्ति/पूजन करते हैं उनका मार्ग दण्ड से ही सही कराती है। माँ के तो दोनों ही प्रिय हैं और दोनों को ही सत्य और उचित मार्ग पर लाने के लिये ही हैं। अब हमें ही इतनी क्षमता उत्पन्न करनी होगी कि हम उनके अनुग्रह को देख सकें। हमारी माँ इतनी वात्सल्यमयी हैं वे गुण

दोषों में समान दृष्टि रखते हुये हमें अपनी गोद में बैठाने को आतुर रहती हैं, चाहे हम कितने भी मलों से संयुक्त हों, क्योंकि हम उनके हैं। अब हमें निर्णय करना है कि हम कौन सा मार्ग चुनेंगे। प्रेम व समर्पण में कुछ और की जरूरत ही नहीं है वह अपने आप में पर्याप्त है। परम शक्ति ईश्वर ने असीम अनुकम्पा कर मनुष्य को भक्ति भाव का वरदान दिया है, जो कि पाठ के लिये अनिवार्य अंग की तरह है। श्रेष्ठ परिणाम हेतु श्रेष्ठ अनुरागमय प्रयास ही करना होगा।

पूजन के उपरान्त समस्त पूजन व उसका फल श्रीमाता को समर्पित कर देना सर्वथा उचित है। माँ से प्रार्थना कर लेना चाहिए कि पूजन हेतु आपने हमें परम सौभाग्य दिया आप इस प्रकार का अनुग्रह हम पर सदैव करती रहें। जो भी आपकी प्रेरणा व अनुग्रह से हो सका वह सभी आपको ही समर्पित है। यथार्थ में आप ही उसे सम्भाल सकती हैं बस हमें तो आप बालवत्, पुत्रवत् ही पालें, आप हमारे गृह में सदैव निवास करती रहें और जो भी आपको श्रेष्ठ लगे वही कार्य आप हमसे कराती रहें।



(प्रभात श्रीवास्तव)

अध्यक्ष

9621855555